मई-जून, 2021
मूल्य : 40 रुपये

ISSN : 2320-1274

परिकथा

समय और समाज की परिक्रमा

वेब अंक

www.notnul.com

सादर श्रद्धांजलि

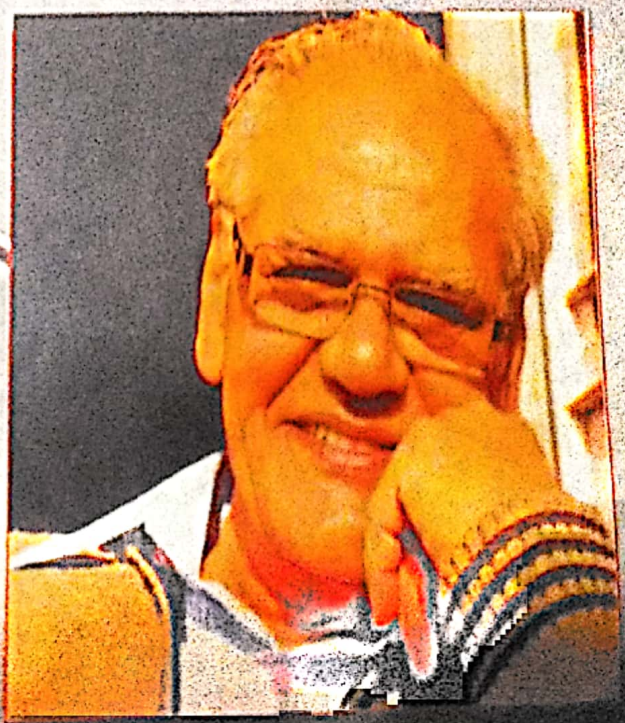

रमेश उपाध्याय
1 मार्च, 1942-24 अप्रैल, 2021

Scanned with CamScanner

कविताएँ जनार्दन ५१

गंगा, तुम बहती हो क्यों? सत्या सत्येन्द्र पाण्डेय ५६

लॉकडाउन अंजू शर्मा ६५

मार्क्स रे सुनना मार्टिन जॉन ७४

ओशाक की मारिया पायल ७८

चरखा

धरोहर

कहानी मार्क्सवा ८१

स्वेटर

स्मरण

अभय की याद में

सद्भावना सभा-मुशायरा कवि सम्मेलन ८४

पाठ

डिस्टोपिया से भविष्य-स्वप्न तक प्रज्ञा ८४

कथायात्रा

हाल फिलहाल की कहानियाँ हरियश राय 91

प्रसंग

कुछ कहानियाँ, कुछ इबादतें तरसेम गुजराल 98

परिक्रमा 103

पाठ

अब्दुल बिस्मिल्लाह का
उपन्यास 'कुठांव'

प्रज्ञा

डिस्टोपिया से भविष्य-स्वप्न तक

कुठांव (उपन्यास)
लेखक : अब्दुल बिस्मिल्लाह
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
मूल्य : 199/-

सुरतीय समाज में धर्म और जाति अपनी पूरी भयावहता के साथ उपस्थित हैं। जातिगत आधार पर सदियों से जारी भेदभाव आजादी के सत्तर वर्ष बाद भी न केवल जारी है बल्कि वह और अधिक क्रूर हो गया है। वर्णाश्रम व्यवस्था द्वारा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के मनुष्यविरोधी बंटवारे से भी भयावह एक अन्य आयाम इन प्रमुख चार वर्णों में भी अनेक उपजातियों का पाया जाना और उनका दूसरे को नीचा समझा जाना है। चाहे वे सवर्ण जातियाँ हों या फिर दलित। मनुष्य विरोधी इस असमानता और भेदभाव की जड़ें भारतीय समाज में काफी गहरी और जटिल रूप में गुत्थमगुत्था हैं। जाति आधारित मनुष्य विरोधी सामाजिक संरचना का रूप इस कदर विद्रूप है कि अनेक बार उत्पीड़ित भी उत्पीड़क की भूमिका में आ जाता है। अक्सर यह माना जाता है कि जाति व्यवस्था मात्र हिंदू धर्म में ही विद्यमान है परंतु वास्तव में ऐसा नहीं है। जाति व्यवस्था अपने अमानवीय रूपों में भारत के लगभग हर धर्म में उपस्थित है। जिन धर्मों को सर्वाधिक लोकतांत्रिक, समतामूलक और बंधुत्व से परिपूर्ण कह कर महिमामंडित किया जाता है उन धर्मों में भी जाति व्यवस्था मौजूद है। यह तथ्य है कि भारत में अनेक निम्न जातियों ने नए धर्मों को इस उम्मीद के साथ अपनाया था कि धर्मांतरण के बाद उन्हें हिंदू धर्म की अमानवीय जाति व्यवस्था का दंश नहीं झेलना पड़ेगा, वे एक मनुष्य की गरिमा के साथ जी सकेंगे, उन्हें अछूत और नीच कह कर अपमानित नहीं किया जाएगा; परंतु सत्य यह है कि धर्म के व्यापक मानवीय लिबास के नीचे उस धर्म को चलाने वाले रूढ़िवादी, जड़ और यथास्थितिवाद के पोषक उच्चवर्णीय वर्ग सभी धर्मों में छिपे रहते हैं जो वास्तव में निम्न जातियों को बराबरी का दर्जा और समानता का अहसास नहीं देना चाहते। उनकी दृष्टि में वे हमेशा से अछूत और नीच ही बने रहते हैं। रोटी-बेटी का सम्बंध तो दूर की बात है साथ बैठकर पानी पीने तक की अनुमति नहीं दी जाती। इसका एक कारण यह भी रहा कि हिंदू धर्म के इतर अन्य धर्मों में धर्मांतरण करने वाले उच्च वर्ण अपने साथ हिंदू धर्म की अपनी सामाजिक हैसियत भी लेकर गए। भारत के अन्य धर्मों की भांति इस्लाम भी जातिवादी जकड़न से अछूता नहीं है। पसमांदा मुसलमानों का एक बड़ा वर्ग आज भी अमानवीय परिस्थितियों में जीने के लिए विवष है। उनकी आवाज बहुत कम सुनाई पड़ती है। इसका प्रमाण यह है कि हिंदी साहित्य में पसमांदा या दलित मुसलमानों की उपस्थिति उतनी मुखर नहीं जितनी हिंदू दलितों की।

जाति आधारित अन्यायी सामाजिक संरचना की परतें हिंदी और मराठी साहित्य में मुख्य रूप से दलितों के सवाल के संदर्भ में अनेक रचनाओं के माध्यम से उजागर हुई हैं। शरणकुमार लिंबाले की 'अक्करमाशी', तुलसीराम की 'मुर्दहिया', 'मणिकर्णिका', कौशल्या बैसंत्री की 'दोहरा अभिशाप', मोहनदास नैमिशराय की 'अपने-अपने पिंजरे', ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'जूठन' आदि ऐसी ही आत्मकथाएँ हैं। हिंदी में भारतीय मुस्लिम समाज के विविध रूप शानी के 'काला जल' और राही मासूम रजा के उपन्यास 'आधा गाँव' में भी दिखाई देते हैं। इन उपन्यासों में आजादी और उसके बाद भारतीय मुसलमानों के अंतर्द्वंद्व और संघर्ष को पूरी जीवंतता के साथ अनुभव किया जा सकता है। वरिष्ठ उपन्यासकार अब्दुल बिस्मिल्लाह हिंदी साहित्य में अपने अनूठे कहन और किस्सागाई के लिए जाने जाते है। उनका नया उपन्यास 'कुठांव' इस्लाम में जातिगत आधार पर होने वाले शोषण और अमानुषिकता को उसकी पूरी क्रूरता के साथ उजागर करता है। कुठांव यहाँ एक ऐसे बुरे स्थल को लक्षित करता है जहां सैद्धांतिक तौर पर तो इस्लाम में कोई भेदभाव नहीं दिखाई देता है, समानता आदि की बात की जाती है। लगता है जैसे जातिगत आधार पर इस्लाम में न कोई भेदभाव है न ही कोई उत्पीड़न। व्यवहार में स्थितियाँ एकदम विपरीत और शीर्षासन में खड़ी दृष्टिगत होती हैं। यह उपन्यास मात्र पसमांदा मुसलमानों की कहानी नहीं कहता बल्कि पसमांदा स्त्री के दोहरे-तिहरे शोषण और संघर्ष को भी दर्ज करता है।

मिर्जापुर के दक्षिणांचल की कहानी है 'कुठांव'। इस कहानी के केंद्र में है इद्दन और उसकी लड़की सितारा। उपन्यास

Scanned with CamScanner